Vol III Issue VIII Feb 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-8 | Feb-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

समाज में पाखण्ड, परिणाम एवं समाधान

सुनीता बामल

चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय,सिरसा (हरियाणा)

***सारांश* :-**मनुष्य के आदिकाल से लेकर उसकी आज तक की यात्रा को विकास यात्रा कहा जा सकता है। भौतिक विकासए बौद्धिक विकास, सांस्कृतिक विकास, सभ्यतागत विकास आदि ऐसे आधार हैं जिनको दृष्टिपथ में रख मनुष्य के विकास का मूल्यांकन होता रहा है। मनुष्य ज्यों–ज्यों विकसित होता गया, त्यों त्यों वह जटिल होता गया। विकास के साथ–साथ जंगलों में रहने वाले इस आदि मानव ने समाज में आकर डरना सीखा। सामाजिक हो जाने पर बहुत हद तक वह मनुष्येत्तर प्राणियों के भय से मुक्त हुआ लेकिन समाज में रहने के कारण उसमें संग्रह की प्रवृत्ति पनपी, संवेदनाओं ने विस्तार पाया, संस्कार आये। अधिक से अधिक संग्रह की प्रवृत्ति ने मनुष्य के अन्तर में एक अलग सोच पैदा की; अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित करने की सोच।

प्रस्तावना :

धन से अधिक सम्पन्न होने को, बल से अधिक सम्पन्न होने को उसने श्रेष्ठता का पैमाना बना लिया। इन्हीं श्रेष्ठताओं को प्राप्त करने के लिए वह मनुष्य से मनुष्येत्तर हुआ। पाखण्ड का जामा पहना। पाखण्ड दूसरों को मूर्ख बनाने के लिएए पाखण्ड अपने को श्रेष्ठ साबित करने के लिए, पाखण्ड भय से मुक्ति पाने के लिए, पाखण्ड लोगों को भरमाने के लिए उसका सहारा बन गया।

पाखण्ड को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं। पा + खण्ड, पा अर्थात पाक, खण्ड अर्थात खण्डन। इस प्रकार जो पवित्रता का खण्डन करे वह पाखण्ड है। ''प्रामाणिक हिन्दी कोश में आचार्य रामचन्द्र वर्मा ने इसका अर्थ वेद विरुद्ध आचरण, ढोंग, आडम्बर, छल, धोखा, धूर्तता, चालाकी लिया है।''

पाखण्ड शब्द का अंग्रेजी पर्याय Hypocrisy है। New oxford intermediate learner's में इसका अर्थ "Behaviour in which sb pretends to have moral standards or opinions that he/she does not really here."

पाखण्ड शब्द को यदि प्राचीन पृष्ठभूमि में देखें तो वेदों के विरुद्ध आचरण करना पाखण्ड है। वेदों में सामाजिक के व्यवहार के विषय में वर्णित है। जीवन में आने वाले संस्कार और विभिन्न घटनाओं पर मनुष्य किस प्रकार की प्रतिक्रिया करे, यह स्पष्ट किया गया है। पुत्र जन्म के संस्कार, विवाह के संस्कार, मृत्यु संस्कार आदि सभी के विषय में उल्लेखित है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य के व्यवहार और संस्कार के विषय में विस्तार से चर्चा की है। हर घटना पर उसका व्यवहार निश्चित किया गया है। जो व्यक्ति इन निश्चित परम्पराओं से हटकर चलता है, उसे ढोंगी, पाखण्डी कहा जाता है। आडम्बर का अर्थ है दिखावा करना, जैसा है उससे हटकर दिखने की कोशिश करना। समाज में ऐसा प्रायः देखा गया है कि हम अपनी वास्तविक स्थिति को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। छिपाने का यह प्रयास आडम्बर के अन्तर्गत आता है। वाणी के विरुद्ध आचरण को भी इसी के अन्तर्गत रखा जायेगा। हम समाज में पाखण्ड की बात करें तो ऐसा कोई व्यक्ति ढूंढना अत्यन्त कठित होगा जो पाखण्ड से जुड़ा हुआ न हों। हम सभी किसी न किसी रूप में पाखण्ड को जीवन में स्थान अवश्य देते हैं और कुछ लोगों के तो सम्पूर्ण क्रियाकलाप पाखण्ड से परिपूर्ण होते हैं प्राचीन काल में जीवन रूपी गाड़ी को सुचारू रूप से चलाने के लिए समाज में कुछ व्यवस्थाएं की गई थी। कुछ सम्प्रदाय बनाए गए थे जिनसे जनसामान्य को उचित दिशा दी जा सके, परन्तु धीरे–धीरे ये सब बाह्य आवरण और ढकोसला बन कर रह गए। समाज में हर तरफ पाखण्ड ही पाखण्ड दृष्टिगोचर होने लगा। प्राचीन काल में ही नहीं वर्तमान युग में भी समाज में चारो ओर पाखण्ड का बोलबाला है। आज हमारा समाज इतना विकृत हो चला है कि मानव से मानवता के गुणों का लोप हो गया है। मनुष्य ही मनुष्य का भक्षण कर रहा है। एक दूसरे से कितना अधिक लाभ उठा लें इसी प्रयत्न में लगा रहता है। तेजी से होते परिवर्तन के कारण मानव अपने स्वरूप को भूल गया है इसलिये वह दिषाहीन होकर रह गया है। हिंसा, झूठ, अब्रहमचर्य, चोरी और परिग्रह जैसी कुप्रवृत्तियां उसके मष्तिष्क में घर कर गयी है। इनके कारण उसमें लोभ, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, मान, मद, मत्सर आदि कलुषित भावनायें उपजती रहती है। लोभ के कारण व्यक्ति यथाषीघ्र धन कमाकर सबसे धनी बन जाना चाहता है। यदि इस कार्य में कोई रूकावट आती है। तो उस कारण से द्वेष उत्पन्न होता है। किसी के पास अपने से अधिक धन सम्पत्ति देखकर व्यक्ति में ईष्या का भाव उदित होता है। यदि उसे किसी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है तो उसके छिन जाने का भय भी उत्पन्न होता है। प्राप्त धन वस्तु आदि नष्ट न हो जाय, छिन न जाय इस कारण जो चिन्ता उत्पन्न होती है वह मोह कहलाती है। ये सब भाव एक व्यक्ति में उसके विकास की विभिन्न अवस्थाओं में जाग्रत

होते रहते हैं। और अंत में इन भावों के वषीभूत होकर सभी मानव पाखण्ड का सहारा ले रहे हैं।

समाज के विकास के साथ–साथ पाखण्ड भी प्रत्येक क्षेत्र मे जड़े जमा चुका है। सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाय तो यह दिखाई पड़ेगा कि समाज की प्रत्येक छोटी बड़ी संस्था पाखण्ड से ओत प्रोत है। जब समाज की कोई छोटी बड़ी संस्था पाखण्ड कर लोगों का शोषण करती है। तो वह समष्टि गत पाखण्ड होता है। इसे भलीभाँति समझने के लिये हमें मानव समाज के विकास पर एक नजर डालनी होगी। यद्यपि प्रारम्भ में पाखण्ड का विस्तार मनुष्य के धर्मिक व्यवहारों से ही समझा जाता था परन्तु अब उसके हर क्षेत्र में अध्ययन करना समीचीन होगा।

धार्मिक दृष्टि से पाखण्ड के अध्ययन से मालूम होता है कि सृष्टिकर्ता एक ईष्वर का विचार मनुष्य में बहुत बाद में आया। दुनिया की सबसे अधिक समुन्नत जातियाँ– यूनानी, रोमन हिन्दू, चीनी, मिस्र आदि तो अपनी समृद्धि के मध्याहन काल तक इसे अपनाने के लिये तैयार नहीं हुई। ईष्वर में विष्वास भी मनुष्य की असमर्थता और बेबसी है। आये दिन हर तरह की विपत्तियों, प्राकृतिक दुर्घटनाओं, शारीरिक और मानसिक बीमारियों की असहाय वेदना सहते–सहते जब मनुष्य बचने का कोई रास्ता नहीं देखता तब यह कहकर संतोष करना चाहता है कि ईश्वर की यही मर्जी है, वह जो कुछ करता है अच्छा करता है वह हमारी परीक्षा ले रहा है। भविष्य के सुख को और अधिक मधुर बनाने के लिये मानव ने यह प्रबन्ध किया है। अज्ञान और असमर्थता के अतिरिक्त यदि कोई और भी आधार ईश्वर विष्वास के लिये है तो वह है धनिकों और धूर्तों की अपने स्वार्थ रक्षा का प्रयास। समाज में होते हजारों अत्याचारों और अन्यायों को वैध साबित करने के लिये उन्होंने ईश्वर का बहाना ढूढ लिया है। धर्म की धोखाधड़ी चलाने के लिये और उसे न्यायपूर्ण साबित करने के लिये ईष्वर बहुत सहायक है। यह है पाखण्ड का विकसित रूप।

वे लोग पाखण्डी हैं जो छिपकर किसी की वस्तु अथवा धन का हरण करते है परन्तु समाज में सदाचारी बने रहने का दिखावा करते हैं।

देश को चलाने वाले वर्तमान राजनेता जनता के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधिकारों का हरण करते है। और बाह्य रूप में प्रजा हितैषी होने का दावा करते हैं। उच्च वर्गीय धन–धान्य सम्पन्न लोग गरीबों के सहायक के रूप में आर्थिक सहायता करते हैं लेकिन अत्याचार दवारा धन प्राप्त करते हैं। फैक्ट्रियों के लोभी मालिक जो मजदूरों को पेट भर अन्न न देकर सारा लाभ अपने पास रखते है। और समाज को विकास की ओर ले जाने का दावा करते हैं। लोभी साहूकार दूना सूद लेते है ओर गरीबों की जायदाद अपने अधिकार में लाने की चिन्ता में रहते है। और गरीबों के शुभचिन्तक बनकर समाज में सम्मान प्राप्त करते हैं। वर्तमान में व्यापारी वर्ग जो वस्तुओं में मिलावट करके धोखा देकर अधिक लाभ कमाना चाहते है। और दिखावे के लिये दान दक्षिणा करते हैं।

न्यायाधीश तथा अन्य अधिकारीगण जो न्याय के रक्षक माने जाते हैं। गीता पर हाथ रखकर सत्यकथन की सौगंध खाते हैं लेकिन व्यवहारिक रूप में एक पल में ही झूठ को सच बना देते हैं। यह बाह्य आवरण पाखण्ड नहीं तो क्या है।

अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मानव अपने सिद्धान्तों से समझौता करने में तनिक भी देर नहीं लगाता और सभ्य होने का दावा करता है। हम सब ईश्वर भक्त होने का दावा करते हैं। परन्तु अनैतिक कर्म करते हुए उस प्रभु को विस्मृत कर देते हैं यह पाखण्ड नहीं तो क्या है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार पाखण्ड एवं पाखण्डी के लक्षण
गीता के सत्रहवें अध्याय के अठारहवें श्लोक में पाखण्ड को राजस बताया गया है।
सत्कार मान पूजार्थ तपो दम्भेम चैवयत्
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्।

जो तप सत्कार मान और पूजा के लिये तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिये भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है वह अनिश्चित एवं क्षमिक काम वाला तप राजस कहा गया है। आगे कहा गया है कि जो दान क्लेष पूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृष्टि में रखकर दिया जाता है वह पाखण्ड पूर्ण दान होता है जैसे कि वर्तमान समय मे चन्दे में धन दिया जाना। यह दान मान बड़ाई प्रतिष्ठा और स्वर्गादि की प्राप्ति के लिये किया जाता है। केवल दम्भाचरण एवं फल को दृष्टि में रखकर किया गया यह यज्ञ पाखण्ड पूर्ण है।

जब हम हिन्दी साहित्य के प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि वेदों और उपनिषदों में सत्य अहिंसा आदि, मानव–मानव को जोड़ने वाले तत्वों का वर्णन है। कालान्तर में भगवान बुद्ध एवं भगवान महावीर द्वारा इनका खूब प्रचार किया गया। आम जनता ने अपनाया भी। परन्तु धीरे–धीरे इन सामाजिक मूल्यों में विकृति आने लगी। लोग दिखावे के तौर पर ही इनका पालन करते रहे परन्तु उनका भीतरी व्यवहार एकदम परिवर्तित हो गया। आज व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में मात्र दिखावा ही मिलता है। मानव में मानव के प्रति प्रेम तो किताबों में लिखी बात मात्र रह गयी है। हम सभी उसे व्यक्तिगत जीवन में लाने से कतराते हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति झूठ बोलकर तात्कालिक लाभ उठाने में सुख का अनुभव करता है। ऊंची जाति का मनुष्य निम्न जाति के मनुष्य की मजबूरियों का लाभ उठाने में अधिक आनन्द का अनुभव करता है। प्रत्येक नौजवान परायी स्त्रियों के प्रति गलत धारणा रखता है बाह्य रूप से भले ही माँ – बहन कहने का दावा करता रहे। दफ्तर का कर्मचारी या अफसर रिश्वत न लेने के लिये, अपने को हीन भावना से ग्रस्त पाता है। एक शिक्षक और कुछ नहीं तो समय की ही चोरी करने लगा है। कहाँ तक कहा जाय समाज का हर वर्ग शीघ्र अति शीघ्र धनवान और सामर्थ्यवान बनने की होड़ में लगा है। इस होड़ में व्यापारी, किसान भी अब पीछे नही रहा। परिणाम यह कि अब कोई भी खाद्य सामग्री शुद्ध कहकर महँगे दामों में बेची जा रही है उसमें अवश्य ही मिलावट है। इतना सब होने के बाद भी एक भी बेइमान नही मिलेगा। सबके पास अपनी इमानदारी के पुख्ता सबूत है।

आज पाखण्ड ने समाज को खोखला कर दिया है। परिणाम स्वरूप कोई व्यक्ति जैसा दिखता है या स्वयं को जैसा दिखाने का प्रयत्न करता है वह वास्तव में वैसा नही है। आज मानव में मानवीय गुणों का सर्वथा लोप हो गया है। पषुओं के बाहरी एवं भीतरी व्यवहारों में समानता होती है परन्तु मनुष्य की आन्तरिक सोच उसके बाह्य आचरण से सर्वथा भिन्न हो चली है।

पाखण्ड का समाधान

मनीषियों ने मानव की चार प्रकार की मनोवृत्तियों को एक दूसरे के प्रति जिम्मेदार माना है। हिंसा, असत्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह। सामान्य मनुष्य उपरोक्त का व्यवहार दूसरों से तो करना चाहता है, परन्तु दूसरों द्वारा अपने प्रति किये गये इन व्यवहारों का निषेध करता है। अर्थात एक व्यक्ति दूसरों के प्रति हिंसा का व्यवहार तो करता है परन्तु दूसरे जब उसके प्रति हिंसा करते है तो वह बुरा मानता है और प्रतिरोध करता है जबकि वह हिंसा करता है तो वह चाहता है कि पीड़ित व्यक्ति उसका प्रतिरोध भी न करे। इसी प्रकार शेष मनोवृत्तियों के लिये समझना चाहिये। इससे समाज में अव्यवस्था फैल जाती है। समय–समय पर समाज में कई सुधार भी हुए है। भगवान बुद्ध, महावीर पतन्जलि आदि ने इससे उबरने के लिये रास्ते बताये तो आगे चलकर सन्त कबीर गुरूनानक ने भी पाखण्ड को खण्डित करने के लिये कटिबद्ध हुए और सफल भी हुए। इनकी वाणियों में मुख्यतः पंचशील अष्टांगिक मार्ग और अष्टायोग के सिद्धान्तों की झलक है। आज भी ये सभी, अहिंसा, सत्य, ब्रहमचर्य, और अपरिग्रह प्रासंगिक है। इन्हीं के द्वारा एक असामाजिक पाखण्डी को सामाजिक बनाया जा सकता है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि आज समाज के हर क्षेत्र में पाखण्ड व्याप्त हैं। चाहे वह धर्म हो, राजनीति हो, आर्थिक जगत हो, सदाचार हो अथवा जाति पाति हो। पाखण्ड के कारण जातीय, धार्मिक व राजनीति सभी क्षेत्रों में ऐसे दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं जो समाज की जड़ों को खोखला कर सकते हैं अतः पाखण्ड विहीन समाज का निर्माण वर्तमान युग की आवश्यकता है और अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि मनोवृतियों के द्वारा पाखण्ड का समाधान सम्भव है।

सन्दर्भ सूचि :–

1.धर्मबीर – कबीर के आलोचक, वाणी प्रकाशन, दिल्ली–1998
2.अभिलाष दास– बीजक, कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद– 1997
3.मदन गोपाल गुप्त– मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, नेशन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली प्रथम
4.डॉ. मनमोहन सहगल– गुरू ग्रन्थ साहिब एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण, भाषा विभाग, पंजाब (पटियाला)
5.जैनेन्द्र कुमार – समय और हम, पुर्वोदय प्रकाशन –1962
6.प्रकाश चन्द्र दीक्षित – भारतीय समाज और समाजिक संस्थाएँ , रतन प्रकाश मन्दिर, अगरा– 1962
7.आचार्य रामचन्द्र वर्मा, प्रामाणिक हिन्दी कोश, पृ0 526
8.टीकाकार आचार्य रामानन्द सरस्वती – मनुस्मृति, पृष्ठ–38
9.विश्वनाथ शुक्ल– हिन्दु समाज व्यवस्था, पृष्ठ–349
10.H.H. Wilson- Religious Sects of the Hindu, Pages - 18 to 23.
11.गुरू अर्जुन देव– गुरू ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ– 274
12.राजेन्द्र यादव – खंड–खंड पाखंड, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 2003
13.श्रीमद् भगवद्गीता – अध्याय –17, श्लोक–18

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net